शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

जनता पार्टी का गठन और चुनाव एवं कर्पूरी ठाकुर

डॉ0 हरि मोहन कुमार,
ग्राम+पो0—बभनटोली, भाया—भगवानपुर,
जिला—वैशाली, बिहार, भारत
Email: dr.harimohankumar@gmail.com

सारांश

कर्पूरी ठाकुर ने लोहिया के अवसान के बाद समाजवादी आंदोलन में काफी सशक्त भूमिका का निर्वाहन किया। कर्परी ठाकुर ने लोहिया के गैर—काँग्रेसवाद को साकार करने के लिए, अखिल भारतीय स्तर पर काँग्रेस को हराने के लिए अन्य दलों के साथ तालमेल बिठाकर चुनावी रणनीति तैयार करने से भी नहीं चूके। गैर—काँग्रेसवाद के रूप में लोहिया जी के बाद 'कर्पूरी शैली' काफी सरल रही। इस संबंध में समाजवादी नेता इन्द्र कुमार का मत है कि कर्पूरी ठाकुर भारतीय राजनीति की एकरसता को समाप्त कर लोकतांत्रिक व्यवस्था और संसदीय व्यवस्था मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर काँग्रेस का विकल्प खोजना चाहते थे। इसी क्रम में उन्होंने मद्रास के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी अन्ना दुरायी से भी मुलाकात की थी जो काँग्रेस के कटु आलोचक और प्रखर विरोधी थे। उसके बाद के दिनों में रामकृष्ण हेगड़े एन0टी0 रामाराव, शरद पवार, करूणानिधि, देवीलाल, फारूख अब्दुल्ला, पी0सी0 सेन और प्रफुल्ल कुमार को मुख्यमंत्री बनाने के लिए कर्पूरी जी ने वहाँ के छात्रों के नाम एक अपील भी जारी की थी।

हम इसे गैर—काँग्रेसवाद का ही कमाल कर सकते हैं कि 1967 में बिहार में पहली बार संयुक्त सरकार का गठन संभव हो सका। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गैर—काँग्रेसवाद की अवधारणा ने ही 1977 में ऐसी क्रांतिकारी लहर पैदा कर दी जिससें न सिर्फ बिहार में अपितु भारत में जनता पार्टी का गठन हुआ और काँग्रेस के किले को तोड़ते हुए भारत एवं बिहार में जनता पार्टी की सरकार बनी। 20 मार्च 1977 को पोलिंग का दिन निर्धारित किया गया और चुनाव संपन्न हुए। उत्तर भारत में काँग्रेस का सफाया हो गया। दक्षिण भारत में उतनी सफलता नहीं मिली जितनी आशा की जाती थी। किन्तु इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र का अस्तित्व भारत में कायम है और निरंकुश सरकार को जनता हरगिज बर्दाश्त नहीं करेगी। इसका सबसे सटीक उदाहरण है श्रीमती इंदिरा गाँधी का रायबरेली से चुनाव हार जाना।

मुख्य शब्द *—समाजवाद, गैर—काँग्रेसवाद, लोकतांत्रिक, जनता पार्टी, आपातकाल, आदी ।*

प्रस्तावना

परिचय —सन् 1947—48 को भारतीय इतिहास में बिलकुल ही नये अध्याय के रूप में हम देखते हैं। एक तरफ भारत को आजादी मिली तो दूसरी तरफ भारत का विभाजन हुआ। यह वह वर्ष

था जिसमें संकल्पों के साथ आगे बढ़ना ही हमारी नियति थी। परतंत्रता की मार झेलते–झेलते भारत बिलकुल जर्जर राष्ट्र बन चुका था और भारत के लिए लोकतंत्र अपरिचित तो नहीं किन्तु व्यवहारिक रूप से अन्जान अवश्य था। इसी परिस्थिति में भारत ने स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए अपना पहला कदम बढ़ाया। परंतु अभी उसे जनतंत्र और सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए स्वतंत्रता का सकारात्मक स्वरूप प्रस्तुत करना बाकी था। दुर्भाग्यवश इसी समय गाँधी जी की हत्या कर दी गई और गाँधी जी की हत्या के बाद समाजवादी लोग काँग्रेस से अलग हो गया। मार्च 1948 के नासिक–सम्मेलन में काँग्रेस समाजवादी दल ने काँग्रेस से अलग होने का फैसला किया। इस प्रकार चौदह वर्ष तक काँग्रेस में रहने के उपरान्त समाजवादी दलों ने उस दल का परित्याग कर भारतीय समाजवादी दल की स्थापना की। समाजवाद का मुख्य लक्ष्य तो सामाजिक परिवर्तन है और जिसमें क्रांति तक जाने की प्रतिबद्धता होनी चाहिए। समाजवादी पार्टी ने सामाजिक उत्पीड़न के प्रश्न को नस्लीय, राष्ट्रीय, और अन्य उत्पीड़नों के साथ जोड़कर सप्तक्रांति के सिद्धांत तथा सामंतवाद के खिलाफ खासकर गरीब किसान और खेतिहर मजदूरों को संगठित कर एक समतामूलक समाज के लिए जन–आंदोलन शुरू किया जिसका लक्ष्य था समाज के सबसे कमजोर आदमी की आवाज भी दुनिया सुन सके। पर समाजवादी आन्दोलन को अभी भी एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो अपनी भाषा वेशभूषा और निष्ठा से भारत के करोड़ो लोगों के दिल में स्वाभाविक तादात्मय स्थापित कर पाता। इस मामले में कर्पूरी ठाकुर सबसे उपयुक्त व्यक्ति थे डॉ0 लोहिया की नजर में।[1]

सन् 1947 में भारत को आजादी मिलने से लेकर 1977 में जनता पार्टी के गठन के बीच तक का समाजवादी आंदोलन का इतिहास टूट–फूट और विलय का रहा है भारत को आजादी मिलने से लेकर जनता पार्टी के गठन तक समाजवादी आंदोलनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। पहले आम चुना में बिहार विद्यानसभा में सोशलिस्ट पार्टी के 23 उम्मीदवार चुनाव जीते। कर्पूरी ठाकुर दरभंगा जिले के ताजपुर विद्यानसभा चुनाव क्षेत्र से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विजयी हुए। यह आँशिक जीत पार्टी को लगे गहरे सदमें से उबारने के लिए प्रर्याप्त नहीं थी। हार के बावजूद सोशलिस्ट बिहार में विपक्ष की सबल पार्टी के रूप में उभरी थी। चुनाव के बाद यह व्यापक रूप से महसूस किया गया कि यदि काँग्रेस को हराना है तो पार्टियों को अपने मतभेदों को छोड़कर एक हो जाना चाहिए। फलस्वरूप जे0वी0 कृपलानी की कृषक मजदूर पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी ने विलय कर एक नए पार्टी का गठन पंचमढ़ी में अपने विशेष अधिवेशन में किया जिसका नामाकरण हुआ–प्रजा सोशलिस्ट पार्टी।

दिसम्बर 1953 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का पहला राष्ट्रीय सम्मेलन इलाहाबाद में हुआ। इलाहाबाद में संपन्न प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ0 लोहिया ने चौखम्बा राज, सत्ता के विकेन्द्रीकरण, आर्थिक समानता, कृषि और औद्योगीकरण पर पार्टी की ओर से अपनी राय रखी। लेकिन अपने जन्म के कुछ ही वर्षो में समाजवादी कलह अहं और दुविधा के कारण विखराव के करीब आ गए और 1 जनवरी 1956 को लोहिया ने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से अलग होकर समाजवादी पार्टी का गठन किया। लेकिन बिहार के अधिकांश समाजवादी नेता

मसलन बसावन सिंह, कर्पूरी ठाकुर, रामानंद तिवारी, सुर्यनारायण सिंह, कपिल देव सिंह आदि प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में ही बने रहे जे0पी0 की सहानुभूति प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के साथ थी।

1964 में विभाजित समाजवादी आंदोलन को एक करने की दिशा में पहल हुई। कर्पूरी ठाकुर ने वक्त का तकाजा जानकर समाजवादी एकता की वकालत की। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना के बाद कर्पूरी ठाकुर जैसे आर्थिक दृष्टि से गरीब व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े नेता और कार्यकर्त्ता को आगे बढ़ने का मौका मिला। अतः समाजवादी विचार वाले प्र0प्र0सो0पा0 के कार्यकत्ताओं ने एकीकरण पर जोर डालना प्रारंभ किया। 1965 ई0 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी एवं सोशलिस्ट पार्टी का एकीकरण सारनाथ बाराणसी सम्मेलन में हुआ।[2]

नई पार्टी का नाम संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी रखा गया। अखिल भारतीय स्तर पर डॉ0 लोहिया संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के सबसे बड़े नेता थें। कर्पूरी ठाकुर जो इस अवधि के आते–आते एक महत्वपूर्ण नेता बन गए थे तथा इसी अवधि में उन्हें डॉ0 लोहिया के अत्यंत करीब आने का मौका मिला। कर्पूरी ठाकुर गैर–काँग्रेसवाद के प्रबल पैरोकार के रूप में उभरकर राजनीति में स्थापित हुए। 1965 में डॉ0 लोहिया के नेतृत्व एवं अन्य विपक्षी दलों के तालमेल के प्रश्न पर सं0 सो0 पा0 में विभाजन हो गया और कुछ नेताओं ने प्र0सो0पा0 को पुनः जीवित करने का प्रयास किया। लेकिन कर्पूरी ठाकुर तथा उनके अन्य सहयोगी सं0सो0पा0 में ही बने रहे। इस प्रकार सं0सो0पा0 भारत में समाजवाद की अग्रणी पार्टी के रूप में उभर कर सामने आयी। इसका प्रभाव सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश तथा बिहार–इन दोनों राज्यों में सं0सो0पा0 के प्रति भारी जन उभार देखने को मिला।

समाजवादी दलों के विभिन्न घटकों में एकता के प्रबल पक्षघर थे कर्पूरी ठाकुर वे न सिर्फ समाजवादी दलों वरन गैर–काँग्रेसी दलों, विशेषकर समाजवादी और साम्यवादी दलों के बीच व्यापक एकता के भी पक्षधर थे। उनके उसी प्रयास का फल था कि 1967 में बिहार में पहली गैर–काँग्रेसी सरकार बनी और बिहार में संयुक्त सरकार का गठन संभव हो सका। यह कर्पूरी ठाकुर के राजनीतिक कौशल का ही कमाल था कि जनसंधी और Communist एक साथ सरकार में रहे।[3]

सन् 1967 का काल भारतीय राजनीति में गैर–काँग्रेसी दलों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ क्योंकि इसी साल 16 राज्यों में चुनाव कराये गए जिसमें आठ राज्यों में काँग्रेस को बहुमत नहीं मिली। ये राज्य थे बिहार, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल। इनमें से छः राज्यों में संयुक्त सरकारों का गठन किया गया। केरल के बाद काँग्रेस के समानान्तर समाजवादी और गैर–काँग्रेसी दलों के सत्ता में आने से राजनीति की अभिजात्यता टुट सी गई। इस बीच सत्ता पक्ष और विपक्षी पार्टियों में जोड़–तोड़ का खेल चलता रहा।

सन् 1967 और 1977 के बीच भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण घटना घटी जिससे बिहार भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। बिहार में 1967 में गैर–काँग्रेसी सरकार बनी और कार्यकाल पूरा नहीं कर सकी। पुनः 1969 में मध्यावधि चुनाव हुए और अंततः 22 दिसम्बर, 1970 को कर्पूरी

ठाकुर पहली बार जनसंघ एवं स्वतंत्र सदस्यों की मदद से बिहार के मुख्यमंत्री बने। पर उनकी सरकार का कार्यकाल अल्प अवधि का ही रहा क्योंकि राजनीतिक एवं व्यक्तिगत विद्वेषों के कारण सरकार एवं दल में जो उठा–पटक प्रारंभ हुई उससे उनकी सरकार 1 जून 1971 को गिर गई। उसके बाद में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी भी टूट गई। इसी बीच 1973–74 में गुजरात एवं बिहार के छात्रों ने ऐतिहासिक आंदोलन प्रारंभ किया। आंदोलन अपने चरम पर पहुँचे, इसके पूर्व ही 25 जून, 1975 की रात इंदिरा गाँधी ने आपातकाल की घोषणा कर दी। वर्ष 1976 में लोकसभा के लिए चुनाव होने वाला था, किन्तु इंदिरा गाँधी द्वारा इसे एक साल के लिए बढ़ा दिया गया। फिर जब अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ा तो 18 जनवरी, 1977 को अचानक सरकार ने आपातकाल में ढिलाई और लोकसभा के लिए तिथियों की घोषणा कर दी। विरोधी दलों के नेताओं को एक–एक कर जेल से छोड़ा जाने लगा। तत्पश्चात् विरोधी दलों में एकीकरण के लिए फिर से प्रयास शुरू हुआ। जय प्रकाश नारायण ने भी एकीकरण के लिए पूरा जोर लगाया। जयप्रकाश नारायण के दबाव ने आंदोलन में शामिल सभी दलों को एक नया दल बनाने, एक चुनाव चिन्ह् स्वीकार करने और एक चुनाव घोषणा–पत्र लेकर देश के सामने आने के लिए मजबूर कर दिया। इसकी परिणति 21 जनवरी 1977 को 'जनता पार्टी' नामक एक दल के निर्माण में हुई जिसकी औपचारिकता नई दिल्ली स्थित मोरारजी भाई के निवास पर संपन्न हुई जहाँ पर कर्पूरी ठाकुर पहले से थे। इस प्रकार भारतीय लोकदल, जनसंघ, संगठन काँग्रेस तथा सोशलिस्ट पार्टी ने 'जनता पार्टी' के नाम से संयुक्त रूप से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी।[4]

समाजवादी सरकारः–

1977 में आजादी के बाद पहली दफा केन्द्र में गैर–काँग्रेसी सरकार बनी थी सम्पर्ण क्रांति और गरबों एवं समाजवादीयों की उम्मीद पर सन् 1977 में बिहार में भी जनता पार्टी की सरकार बनी पूर्ण बहुमत के साथ। जनता पार्टी के गठन के बाद बिहार ही नहीं बल्कि भारतीय राजनीति में भी आये परिवर्तन को आसानी से देखा जा सकता है। जनता पार्टी के गठन के पूर्व लगभग संपूर्ण भारत में (अपवाद स्वरूप कुछ राज्यों को छोड़कर) काँग्रेस का एकाधिकार था किन्तु 1977 के बाद परिस्थितियाँ बदल गई। जनता पार्टी के गठन ने विपक्षी पार्टियों के लिए एक ऐसी बुनियाद रख दी जिससे कालांतर में काँग्रेस पार्टी के एकाधिकारवाद को लगभग समाप्त कर दिया।

जनता पार्टी का गठन एक लम्बी राजनीतिक सूझ–बूझ का परिणाम था कि जिस पर राम मनोहर लोहिया के समाजवादी विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। साथ ही जयप्रकाश नारायण एवं कर्पूरी ठाकुर की दूरदर्शिता का परिणाम भी हम कह सकते है। जनता पार्टी के गठन के पीछे कई कारक थे जिनकी व्याख्या करना अनिवार्य है। इसके गठन के विभिन्न कारक थे जिनकी व्याख्या निम्नलिखित रूप में की जा सकती है।[5]

(1) गैर–काँग्रेसवाद की अवधारणा

(2) समाजवादी पार्टी का गठन

(3) 1962 का भारत–चीन युद्ध

(4) जय प्रकाश आंदोलन

(5) आपातकाल

जे0पी0 अगर 'नेहरूवाद' के मायाजाल में नहीं पड़ते और डॉ0 लोहिया के गैर–कॉंग्रेसवाद का समर्थन और उससे सहयोग किया होता तो परिस्थितियाँ दूसरी होती। वे जब दुबारा राजनीति में आये तब सर्वोदय की सक्रियता त्याग कर तो उन्होंने उसी गैर–कॉंग्रेसवाद का दामन थामा। डॉ0 लोहिया के गैर–कॉंग्रेसवाद बिहार में तभी प्रबल हुए एवं उसे सफलता मिली जब कर्पूरी ठाकुर ने रामानन्द तिवारी, कपिलदेव सिंह, सभापति सिंह, वशिष्ट नारायण सिंह जैसे साथियों–सहयोगियों के साथ उसमें दिलचस्पी ली। जो छोटी धारा थी वह मुख्य धारा हो गई। इसलिए यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि देश में आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया आदि नेताओं ने यदि समाजवादी आंदोलन का आह्वान किया और उसे सैद्धांतिक आधार प्रदान किया तो कर्पूरी ठाकुर ने इसे मूर्त रूप दिया। कर्पूरी ठाकुर को छोड़कर लोहिया के बाद दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था जो समाजवाद को किताब से निकालकर व्यावहारिक जगत में धरातल पर उतार सके। इसलिए वे हर तरह की विषमता के खिलाफ लड़ते रहे वह चाहे सामाजिक हो अथवा देश के अंदर की क्षेत्रीय विषमता जिससे राष्ट्र–राज्य में विरोधाभाष की स्थिति पैदा न हो सके। विषमता का जो बहुआयामी स्वरूप है उसमें जब क्षेत्रीय विषमता दूर होगी तभी सामाजिक विषमता दूर हो पायेगी। इस दृष्टिकोण से उनका विषमता विरोधी प्रयास बहुआयामी था। यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कॉंग्रेस के अलावा भी अन्य लोगों व पार्टियों का भारत की स्वतंत्रता में योगदान है। निः संदेह भारत को आजाद कराने में समाजवादियों की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण थी। भातर में समाजवादी आंदोलन को मूर्तरूप देने में राममनोहर लोहिया की बहुत बड़ी भूमिका थी। लोहिया ही सर्वप्रथम वे व्यक्ति थे जिन्होंने गैर–कॉंग्रेसवाद की अवधारणा को मूर्त रूप देने का प्रयास किया और इनका प्रयास पूर्णतः सफल हुआ 1967 में जब नौ राज्यों में विद्यानसभा में कॉंग्रेस की हार हुई शेष राज्यों में यद्यपि कॉंग्रेस की जीत हुई थी तथा हमेशा प्राप्त होने वाले मतों की संख्या में अबकि बार कॉंग्रेस को जर्वदस्त घाटा हुआ।[6]

आपातकालः–ठीक उसी समय कॉंग्रेस अपनी हार एवं जयप्रकाश आन्दोलन की तीब्रता का रूख देखकर प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने 25 जून, 1975 की रात में पूरे देश में आपातकाल की घोषणा कर दी। अखबारों पर सेंसरशिप लागू हो गया। राजनीतिक जुलूस, प्रदर्शन, धरना तथा इस तरह की अन्य गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। मीसा (मेंटेनेंस ऑफ इंटरनल सिक्यूरिटी एक्ट) के तहत नेताओं, लोगों को पकड़–पकड़ कर बंद किया जाने लगा। 26 जून 1975 को 4 बजे सुबह में ही जयप्रकाश नारायण को दिल्ली के गाँधी शांति प्रतिष्ठान में गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजी शासनकाल में भी ऐसा अंकुश और जुल्म नहीं देखा गया था। आपातकाल के दूसरे दिन देश के अधिकांश भागों में लोगों ने प्रतिवाद किया। इस घटना पर सेंसरशिप के कारण अखबारों में उसकी कोई जगह नहीं मिली। कर्पूरी ठाकुर उस दिन बारात में सम्मिलित होने नेपाल के राज–विराज पहुँचे हुए थें। उन्हें वहीं बी0बी0सी0 रेडियों के माध्यम

से आपातकाल की घोषणा और जय प्रकाश नारायण समेत अन्य विरोधी दल के नेताओं की गिरफ्तारी की खबर मिली।

कर्पूरी ठाकुर के सामने अब प्रश्न यह उठा कि आपातकाल का विरोध करते हुए आंदोलन को चालू कैसे रखा जाए। उनके समक्ष सिर्फ दो विकल्प थें, गाँधीवादी सिद्धांत का पालन करते हुए जुलूस, धरना और सत्याग्रह के माध्यम से आपातकाल का विरोध या फिर भूमिगत रहकर आंदोलन की आग को प्रज्वलित रखा जाए। कर्पूरी ठाकुर को लगा कि तत्काल किसी जुलूस, सभा, प्रर्दशन या धरना का अर्थ है स्वयं को यातनाओं का शिकार बनाना। यह खुद बाध के मुँह में जाने के समान था। अतः कर्पूरी ठाकुर ने भूमिगत रहकर ही आंदोलन की आग को प्रज्वलित रखना उचित समझा। छात्र–जन संघर्ष समिति तथा विरोधी दल के नेताओं से संपर्क कायम किया एवं आपातकाल के विरोध में पर्चा–पम्पलेट लिखते रहे। इस प्रकार भूमिगत आंदोलनकारियों को नेपाल से ही मार्गदर्शन देते रहे। कर्पूरी ठाकुर पुलिस और गुप्तचरों की नजरों से बचते हुए अपने संपर्क सूत्रों द्वारा जयप्रकाश नारायण से नियमित संपर्क साधते रहे और आंदोलन के संबंध में उनसे दिशा निर्देश लेते रहे। काँग्रेस के विरूद्ध विरोधी दलों में एकता के लिए कर्पूरी ठाकुर का प्रयास जारी रहा।[7]

18 जनवरी 1977 को अचानक सरकार ने आपातकाल में ढ़िलाई और लोकसभा चुनाव के लिए तिथियों की घोषणा कर दी। विरोधीदलों के नेताओं को एक–एक कर जेल से छोड़ा जाने लगा। जयप्रकाश नारायण ने भी एकीकरण के लिए पूरा जोर लगाया। जे0पी0 के दबाव ने आंदोलन ने शामिल सभी दलों को एक नयादल बनाने, एक चुनाव चिंह स्वीकार करने और एक चुनाव घोषणा–पत्र लेकर देश के सामने आने के लिए मजबूर कर दिया। भारतीय लोकदल, जनसंघ, संगठन काँग्रेस तथा सोशलिस्ट पार्टी ने 'जनता पार्टी' के नाम से संयुक्त रूप से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। जनता पार्टी की विधिवत घोषणा हो जाने के बाद कर्पूरी जी जे0पी0 से मिलने गाँधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली गए और वहाँ तय हुआ कि कर्पूरी जी अब भूमिगत जीवन त्यागकर संगठन और चुनाव में सक्रिय हों। इसके लिए जे0पी0 द्वारा आहुत 30 जनवरी 1977 को पटना में सभा की तारीख तय हुआ। उसी दिन कर्पूरी जी के साथ सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार कर फुलवारी जेल में रखा गया। 13 दिन जेल में रखने के बाद कर्पूरी जी को छोड़ा गया। जेल से रिहाई के बाद कर्पूरी ठाकुर लोकसभा चुनाव की तैयारी में जूट गए।

20 मार्च 1977 को चुनाव का दिन निर्धारित किया गया। उसी दिन चुनाव संपन्न हुए। उत्तर भारत में काँग्रेस का सफाया हो गया। दक्षिण भारत में उतनी सफलता नहीं मिली जितनी आशा की जाती थी। किन्तु इस चुनाव ने यह सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र का अस्तित्व भारत में कायम है। इसका सबसे सटीक उदाहरण है श्रीमती इंदिरा गाँधी का रायबरेली से चुनाव हार जाना। 1977 में काँग्रेस की हार के साथ ही आजादी के बाद पहली बार गैर–काँग्रेसी सरकार बनी थी–संर्पूण क्रांति और गरीबों की मदद पर। जनता पार्टी का गठन और चुनाव में जो सफलता मिली उसमें कर्पूरी ठाकुर की सादगी साफ झलकती है।[8]

निष्कर्ष

कर्पूरी ठाकुर समाजवादी दलों के विभिन्न घटकों में एकता के प्रबल पक्षघर थे। इसी का नतीजा था कि कर्पूरी ठाकुर जैसे आर्थिक दृष्टि से गरीब व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े नेता और कार्यकर्त्ता को आगे बढ़ने का मौका मिला। कर्पूरी ठाकुर के मदद से 'जनता पार्टी' के गठन एवं उससे बिहार की राजनीति में आये परिवर्तन को आसानी से महसूस किया जा सकता है। एक गरीब, छोटी जाति का आदमी बिहार के मुख्यमंत्री के पद पर काबिज हो सका यह निः संदेह जनता पार्टी की ही देन है। जनता पार्टी के गठन के बाद कॉंग्रेस पार्टी को अपनी नीतियों में परिवर्तन करने के लिए बाह्य होना पड़ा। जनता पार्टी के गठन ने पिछड़ों, गरीबों, शोषितों के लिए राजनीति के उच्च पदों पर पहुँचने का मार्ग प्रशस्त कर दिया जिसे हम आज आसानी से देख सकते हैं।

संदर्भ

1 सहाय कृष्ण, *सोशलिस्ट मूवमेंट इन इंडिया:* क्लासिकल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1967 पृ0 –75

2 प्रसन्न कुमार चौधरी / श्रीकांत, *'बिहार में सामाजिक परिवर्तन के कुछ आयाम:* वाणी प्रकाशन, पटना, 2001, पृ0 सं0–210–11

3 शर्मा राजेन्द्र, *कर्पूरी ठाकुर का जीवन संग्राम,* हबलदार त्रिपाठीसहृदय, कर्पूरी ठाकुर, अभिनंदन ग्रंथ, पटना, 1987, पृ0 सं0–153

4 शरद ओंकार, *लोहिया,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1987 पृ0 सं0–210, 248

5 किशोर सुरेन्द्र, स्मृति अंक, साप्ताहिक दिनमान, दिल्ली, 15 मार्च, 1988 के अंक में,

6 सिन्हा अशोक कुमार, *'जननायक कर्पूरी ठाकुर',* विशाल पब्लिकेशन, पटना, 1988, पृ0–83

7 राममूर्ति आचार्य, *जे0पी0 की विरासत,* जय प्रकाश अमृतकोष, पटना–1982, पृ0 सं0–24,56,85

8पाठक नरेन्द्र, *कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,1997 पृ0 सं0–128,145